खुरहा-मुँहपका रोग

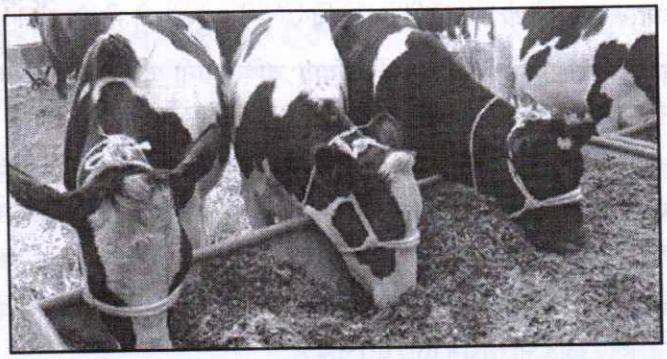

समर्पण

सुन्दरनगर, कोडरमा - 825410

(झारखण्ड)

Contact : 9934148413, 06534-252914

Email : samarpanjharkhand@ gmail.com, Web : Samarpanjharkhand.org

खुरहा–मुँहपका रोग क्या है?

- खुरहा–मुँहपका एक विषाणुजनित (ट्पतंस) रोग है।
- यह सामान्यतः गाय, भैंस, भेड़, बकरी, सूकर आदि को संक्रमित करता है।
- यह पालतु पशुओं के अलावे हिरण आदि जंगली पशुओं को भी होता है।
- विषाणुजनित रोग होने के कारण यह वायु, दूषित पानी, दूषित खाद्य पदार्थ एवं बीमार पशुओं के संपर्क में आने पर आसानी से फैलता है।
- इसके अलावे संक्रमित खटाल, डेयरी फार्म आदि में काम करने वाले कर्मचारियों के जूते–चप्पल एवं कपड़ों के संपर्क में आने पर भी स्वस्थ पशुओं में यह रोग फैलता है।
- मुँहपका–खुरपका रोग किसी भी उम्र की गायें या उनके बच्चों में हो सकता है। इसके लिए कोई भी मौसम निश्चित नहीं है

इस रोग के मुख्य लक्षण

- रोग के शुरूआत में तेज बुखार होना।
- खाना नहीं खाना।
- पैर को झाड़ना (पटकना)।
- पैरों में सूजन (खुर के आस–पास)
- मुँह से लार गिरना।
- मुँह में छाले पड़ जाना।

- लंगड़ापन।
- थान एवं बाट में छाले पड़ना
- खुर में घाव होना एवं घावों में कीड़ा हो जाना।
- जीभ, मसूढ़े, ओष्ठ आदि पर छाले पड़ जाना।
- दुधारू पशुओं के दूध में अत्यधिक ह्रास होना।
- गाभिन पशुओं में गर्भपात हो जाना।
- बैलों की कार्य क्षमता में कमी।
- प्रभावित पशु स्वस्थ होने के उपरांत भी महीनों हांफते रहता है।
- बीमारी से ठीक होने के बाद भी पशुओं की प्रजनन क्षमता वर्षों तक प्रभावित रहती है।

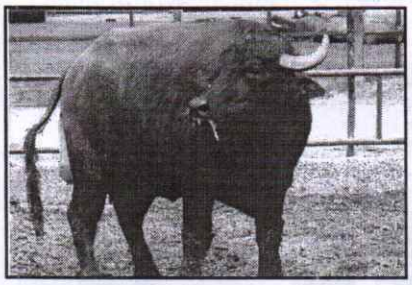

बचाव के उपाय

- खुरहा एवं मुँहपका रोग विषाणुजनित (Viral) होने के कारण इसका कोई विशिष्ट उपचार नहीं है। अतः टीकाकरण ही इस रोग से बचाव का एकमात्र उपाय है।
- प्रत्येक छः माह के अंतराल पर FMD टीका (वर्ष में दो बार) अवश्य लगायें।
- बाहर से नए पशुओं को लाने से पहले यह सुनिश्चित कर लिया जाए कि उनमें FMD टीका लगा है या नहीं।
- रोगग्रस्त पशु के पैर को नीम एवं पीपल के छाले का काढ़ा बनाकर दिन में दो से तीन बार धोना चाहिए।
- प्रभावित पैरों के फिनाइल युक्त पानी से दिन में दो–तीन बार धोकर मक्खी को

- दूर रखने वाली मलहम का प्रयोग करना चाहिए।
- मुँह के छाले को 1 प्रतिशत फिटकरी अर्थात् 1 ग्राम फिटकरी 100 मिलीलीटर पानी में घोलकर दिन में तीन बार धोना चाहिए।
- प्रभावित पशु को साफ एवं हवादार स्थान पर अन्य स्वस्थ पशुओं से दूर रखना चाहिए।
- पशुओं की देखरेख करने वाले व्यक्ति को भी हाथ–पांव अच्छी तरह साफ कर ही दूसरे पशुओं के संपर्क में जाना चाहिए।
- प्रभावित पशु के मुँह से गिरने वाले लार एवं पैर के घाव के संसर्ग में आने वाले वस्तुओं, पुआल, भूसा, घास आदि को जला देना चाहिए या जमीन में गडढा खोदकर चूना के साथ गाड़ देना चाहिए।
- वैसे इलाज से बेहतर है बचाव के सिद्धांत को अपनाना। छः माह से उपर के स्वस्थ पशुओं को खुरहा–मुँहपका रोग के विरूद्ध टीकाकरण करवाना चाहिए।

नोट : बीमारी के लक्षण दिखाई देने पर या अपने अधिक जानकारी के लिए जनदीक के पशु चिकित्स से अवश्य संपर्क करें।

समर्पण, कोडरमा के द्वारा जनहित में प्रचारित प्रसारित

SUPPORTED BY

BJSAM

RESPONSIBLE MICA INITIATIVE

BJUP
reach the *next* level